Vol III Issue IX March 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

राजीव गांधी जल ग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन का रोजगार एवं प्रवजन की स्थिति पर प्रभाव। (धार जिले के विशेष संदर्भ में)

कविता अग्रवाल , पिंकी गोखले

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, एबी रोड इन्दौर
पी.एच. डी. शोधार्थी (अर्थशास्त्र)

सारांश :-भारत एक कृषि प्रधान एवं ग्राम प्रधान देश है। समय के साथ शहरों में जनसंख्या का लगातार दबाव बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण हमारी ग्रामीण कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का वर्षा आधारित होना तथा मौसमी बेरोजगारी एवं प्रच्छन्न बेरोजगारी तो है ही साथ ही साथ हमारे भूजल स्तर, चारागाह, निकटस्थ वनों की स्थिति एवं वन संपदा का अप्रबंधन एवं अनाप–शनाप विदोहन भी है। जिसने कृषि तथा उससे जुड़े क्षेत्रों एवं उद्योगों को घाटे के व्यापार में परिवर्तित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। जिसका सीधा प्रभाव ग्राम विकास पर पड़ा है, ग्रामीण बेरोजगारी और गरीबी बढ़ी है और गांवो से पलायन बढ़ा है। उक्त समस्या के समाधान हेतु राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन एक ग्राम विकास की समग्र परियोजना के रूप में उभरकर सामने आयी है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन का धार जिले में त्दकवउॅउचसपदह उमजीवक के द्वारा 240 हितग्राहीयो का चयन कर रोजगार एवं प्रवजन की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध प्रपत्र में मिशन के प्रभावों के अध्ययन हेतु प्रतिशत विश्लेषण एवं काई वर्ग परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया । मिशन के क्रियान्वयन से धार जिले के बेरोजगार ग्रामीणों, सीमांत, कृषकों को प्राप्त होने वाले रोजगार के अवसरों तथा रोजगार के दिवसों में वृद्धि हुई है एवं ग्रामीण आत्मनिर्भर बने है। साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्र से पलायन में भी कमी हुई है।

प्रयुक्त शब्दावली – जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन, ग्रामीण विकास, रोजगार, प्रवजन, रोजगार दिवस, दैनिक रोजगार, स्थायी स्वरोजगार, जल संरक्षण एवं संवर्धन।

प्रस्तावना :

भारत एक कृषि प्रधान एवं ग्राम प्रधान देश है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत देश में 6.41 लाख ग्राम है तथा देश की कुल जनसंख्या का 68.84 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। इसी तरह मध्यप्रदेश राज्य की कुल जनसंख्या का 72.39 प्रतिशत ग्रामों में निवासरत है। समय के साथ प्रदेश में शहरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है और शहरों में जनसंख्या का लगातार दबाव बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण हमारी ग्रामीण कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का वर्षा आधारित होना तथा मौसमी बेरोजगारी एवं प्रच्छन्न बेरोजगारी तो है ही साथ ही साथ हमारे भूजल स्तर, चारागाह, निकटस्थ वनों की स्थिति एवं वन संपदा का अप्रबंधन एवं अनाप–शनाप विदोहन भी है। जिसने कृषि तथा उससे जुड़े क्षेत्रों एवं उद्योगों को घाटे के व्यापार में परिवर्तित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। जिसका सीधा प्रभाव ग्राम विकास पर पड़ा है, ग्रामीण बेरोजगारी और गरीबी बढ़ी है और गांवो से पलायन बढ़ा है।

मध्यप्रदेश में कुछ समय पहले तक तो ये स्थिति थी कि प्रदेश के कुल जिलों की ग्रामीण आबादी 12 महीनों में से 9 महीने शहरों की ओर पलायन कर जाती थी। ऐसे में ग्रामों के सतत् विकास की ऐसी परियोजनाओं की आवश्यकता थी, जो कि देश की मरती हुयी कृषि प्रधान एवं ग्राम प्रधान अर्थव्यवस्था को न सिर्फ प्राण वायु दे, बल्कि उसे मजबूती एवं गति प्रदान कर घाटे के व्यापार की जगह फायदे का सौदा बनाये, स्थानीय एवं स्थायी रोजगार में वृद्धि करे, साथ ही प्रवजन में कमी लाये। संसाधनों का सतत् विकास हो, उसमें कमी न आकर संवृद्धि हो।

उक्त समस्याओं पर केन्द्रित होते हुए मध्यप्रदेश एवं केन्द्र सरकार ने ग्राम विकास की कई परियोजनाओं पर कार्य आरंभ किया, इनमें से राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन एक ग्राम विकास की समग्र परियोजना के रूप में उभरकर सामने आयी है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन का धार जिले में रोजगार एवं प्रवजन की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन – एक संक्षिप्त परिचय

जल प्रबंधन की आवश्यकता को स्वीकार कर प्राकृतिक संसाधनो को ग्रामीण विकास का माध्यम मानते हुए म.प्र. सरकार ने 20 अगस्त 1994 को राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन का गठन किया । धार जिले में इसका प्रारंभ 1995 में हुआ। मिशन का जिला स्तर

पर क्रियान्वयन जिला पंचायत द्वारा किया जाता है। राजीव गाँधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन ग्रामीण समाज की बुनियादी जरूरतो की पूर्ति और कठिनाईयों को हल करने वाला एकमात्र कार्यक्रम है। मिशन का स्वरूप तय करने से लेकर क्रियान्वयन एवं रखरखाव की जिम्मेदारी समाज की होती है।

जलग्रहण क्षेत्र सलाहकार समिति द्वारा जलग्रहण क्षेत्र या वाटर शेड का चयन किया जाता है 5000–10,000 हैक्टेयर के क्षेत्र को मिलीवाटर शेड नाम दिया है एक मिलीवाटर शेड में 2–10 माइक्रोवाटर शेड हो सकते है। प्रत्येक माइक्रोवाटर शेड का क्षेत्र 500–1000 हैक्टेयर, कभी–कभी उससे कम हो सकता है। जिसमें एक गाँव या उससे अधिक गाँव शामिल हो सकते है। उपचार कार्य के लिए जलग्रहण का क्षेत्र टोपोग्राफी के आधार पर तय किया जाता है। एक मिलीवाटर शेड क्षेत्र का नियंत्रण एक परियोजना अधिकारी द्वारा होता है।

मिशन के विभ्न्नि उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 5 वर्षीय कार्ययोजना बनायी जाती है तथा विभिन्न वाटर शेड संरचनाओं जैसे– कंटूर बंड, नाला बंधान, बोल्डर चेक, स्टापडेम, सोख्ता गढ्ढा, खेत तालाब, मेंढ बंधान आदि के द्वारा जल प्रबंधन कर लक्ष्यों की पूर्ति की जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य – धार जिले में राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप रोजगार एवं प्रवजन पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।

अध्ययन का क्षेत्र – प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन क्षेत्र म.प्र. के धार जिले को चुना है। वर्तमान में जिले मे 50 मिलीवाटर शेड परियोजना कार्यशील है। प्रस्तुत शोध पत्र मे Random Sampling के द्वारा 20 मिलीवाटर शेड परियोजनाओ का चयन किया गया है। प्रत्येक मिलीवाटर शेड में से 12 हितग्राहीयो का चयन किया गया है। अर्थात कुल 20 मिलीवाटर शेड मे 240 हितग्राहीयो से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से रोजगार एवं प्रवजन पर पड़ने वाले मिशन के प्रभावों को जानने का प्रयास किया गया है। योजना के प्रभावों का सूक्ष्म मूल्यांकन करने हेतु उन 20 मिलीवाटर शेड परियोजनाओं का चयन किया गया है जिसमें क्रियान्वयन का अंतिम वर्ष चल रहा है।

अध्ययन विधि – यह अध्ययन समूह चर्चा एवं प्राथमिक समंकों पर आधारित है समंकों के संकलन हेतु धार जिले में राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिषन योजना के हितग्राहियों को आधार बनाया गया है।

जिले में मिशन के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु मिशन के पूर्व एवं पश्चात् योजना अवधि (1995–2010) परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की संख्या, प्राप्त रोजगार दिवस तथा प्रवजन करने वाले हितग्राहियों का अंतर ज्ञात कर प्रतिशत वृद्धि ज्ञात की गई है तथा परिकल्पनाओं का काई वर्ग परीक्षण सांख्यिकीय विधि द्वारा परीक्षण कर प्रभाव का आकलन किया गया है। अंत में परियोजना के क्रियान्वयन में आने वाली कमियों को रेखांकित कर उन्हें दूर करने हेतु सार्थक प्रयास प्रस्तुत किए गए।

प्रयुक्त सूत्र –

(1)प्रतिशत = a – b/a X 100

जहाँ a एवं b क्रमशः मिशन के पूर्व एवं पश्चात के समंक है।

(2)(काई वर्ग परीक्षण) = $\chi^2 = \sum \frac{(O_{ij} - E_{ij})^2}{E_{ij}}$

जहाँ,

Oij = i वीं पंक्ति और j वें स्तम्भ से सम्बन्धित कोश की अवलोकित बारम्बारता

Eij = i वी पंक्ति और j वे स्तम्भ से सम्बन्धित कोश की अपेक्षित बारम्बारता

मिशन का रोजगार पर प्रभाव – प्रस्तुत अध्ययन में रोजगार के अंर्तगत परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की स्थिति, प्राप्त रोजगार दिवस एवं स्थायी स्वरोजगार से संबंधित 3 सूचकांकों को षामिल किया गया है।

परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की स्थिति –

शून्य परिकल्पना – मिशन का परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की संख्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

स्वातंत्रय कोटि (df) = 2 के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर x^2 का परिकलित मान 237.7 है जो कि x^2 के सारणी मान 5.991 से अधिक है स्पष्ट है कि चर परस्पर संबंधित है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है अर्थात मिशन का परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की संख्या पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उक्त प्रभाव को तालिका क्रमांक 1.1 में स्पष्टतः दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1.1
उत्तरदाताओं के परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की स्थिति

क्र.	परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों कि स्थिति	मिशन के पूर्व		मिशन के पश्चात		अंतर वृद्धि/कमी a-b/a x 100
		उत्तरदाताओं की संख्या (a)	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या (b)	प्रतिशत	
1	एक	62	25.8	51	21.3	17.7
2	एक से अधिक	29	12.1	181	75.4	524
3	किसी को नहीं	149	62.1	8	3.3	94.6
	योग	**240**	**100**	**240**	**100**	

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर

चित्र क्रमांक 1.1
उत्तरदाताओं के परिवार में रोजगार प्राप्त सदस्यों की स्थिति

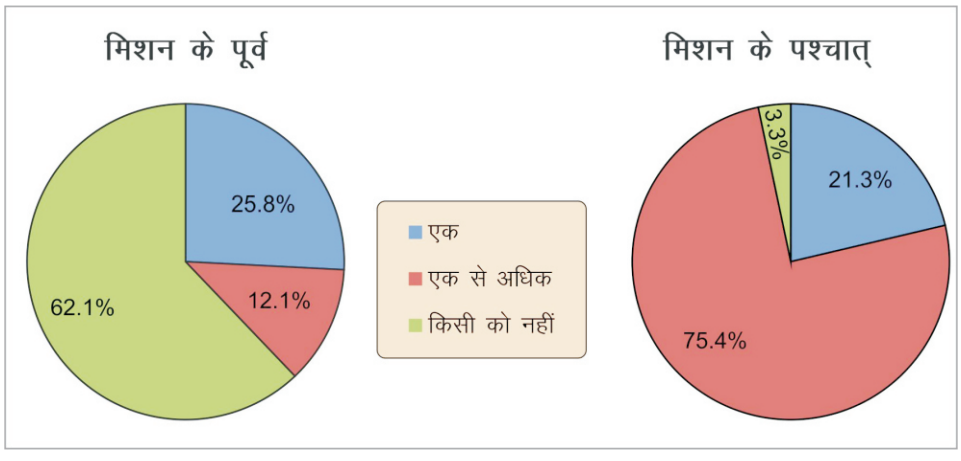

तालिका अनुसार कुल 240 उत्तरदाताओं में से 62.1 प्रतिशत के परिवार के किसी सदस्य के पास रोजगार नहीं था। वहीं मिशन के पश्चात् यह प्रतिशत घटकर 3.3 प्रतिशत हो गया। साथ ही मिशन के पश्चात् एक से अधिक सदस्यों को रोजगार प्राप्त करने का प्रतिशत 12.1 प्रतिशत से बढ़कर 71.1 प्रतिशत दर्ज किया गया है।निष्कर्षतः मिशन के पश्चात् रोजगार में सकारात्मक वृद्धि हुई है मिशन के हितग्राही एवं सम्बन्धित जलग्रहण क्षेत्र आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुऐ है।

प्राप्त रोजगार दिवस पर प्रभाव –

शून्य परिकल्पना – मिशन का हितग्राहियों को प्राप्त रोजगार दिवसों की संख्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

स्वातंत्रय संख्या $(df) = 2$ के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर x^2 का परिकलित मान 165.60 है जो कि x^2 के सारणी मान 5.991 से अधिक है, स्पष्ट है कि चर परस्पर संबंधित हैं। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत एवं वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात मिशन का हितग्राहियों को प्राप्त रोजगार दिवसों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। मिशन के पूर्व एवं पश्चात उत्तरदाताओं को प्राप्त रोजगार दिवसों पर पड़ने वाले प्रभाव को तालिका क्र. 1.2 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 1.2
प्राप्त रोजगार दिवसों पर प्रभाव

क्र.	रोजगार दिवस	मिशन के पूर्व		मिशन के प□चात		प्रतिशत वृद्धि/कमी a-b/a x 100
		उत्तरदाताओं की संख्या (a)	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या (b)	प्रतिशत	
1	0-75	147	61.3	14	5.8	90.5
2	75-150	56	23.3	128	53.4	128.6
3	150-225	37	15.4	98	40.8	164.9
	योग	**240**	**100**	**240**	**100**	

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर

चित्र क्रमांक 1.2
प्राप्त रोजगार दिवसों पर प्रभाव

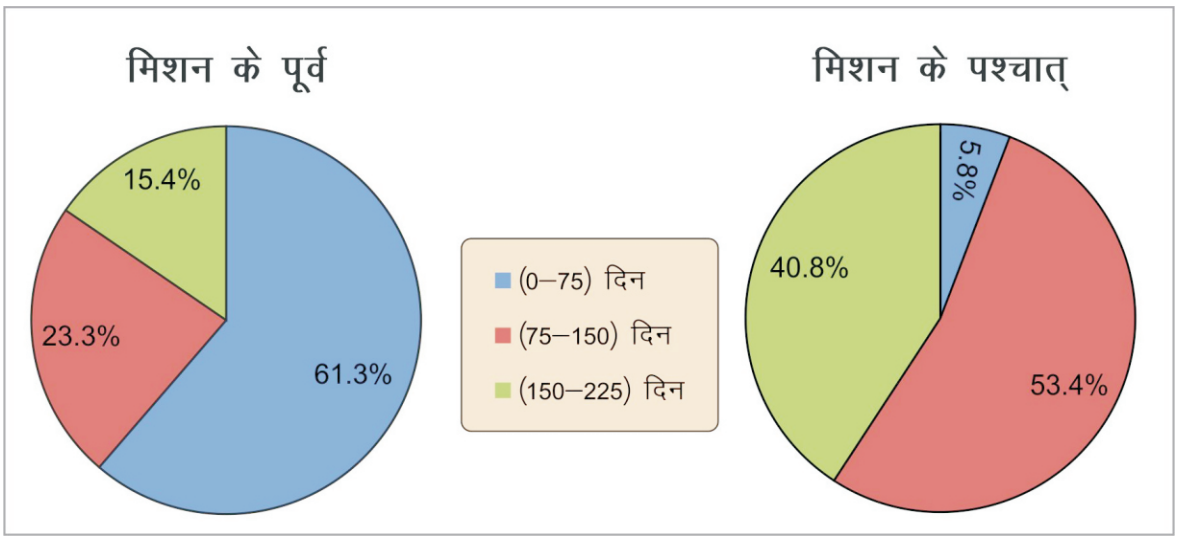

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि मिशन के पश्चात (0.75) दिवस के बीच रोजगार प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 61.3 से घटकर 5.8 प्रतिशत रह गया तथा (75.150) दिवसों एवं (150.225) दिवसों के बीच रोजगार प्राप्त करने वाले उत्तरदाओं का प्रतिशत क्रमशः 23ण्3 प्रतिशत से बढ़कर 53.4 प्रतिशत तथा 15.4 प्रतिशत से बढ़कर 40.8 प्रतिशत दर्ज की गई है। इस प्रकार (75.150) दिवस के बीच रोजगार प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या में 128.6 प्रतिशत की वृद्धि तथा (150.225) दिवस के बीच रोजगार प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या में 164.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज किया गया है, स्पष्ट है कि मिशन के क्रियान्वयन के पश्चात् हितग्राहियों को प्राप्त होने वाले रोजगार दिवसों की संख्या में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

मिशन का स्वरोजगार पर प्रभाव – मिशन के अंतर्गत संचालित स्वरोजगार कार्यक्रमों के तहत ग्रामीणों द्वारा प्राप्त स्थायी स्वरोजगार की स्थिति को तालिका क्रमांक 1.3 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

तालिका क्रमांक 1.3
स्थायी स्वरोजगार की स्थिति

क्र.	स्थायी स्वरोजगार	मिशन के पूर्व		मिशन के प□चात	
		उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	कृषि पर आधारित रोजगार	30	12.5	72	30
2	लघु कुटीर उद्योग	15	6.3	33	13.8
	योग	**45**	**18.75**	**105**	**43.75**

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर

चित्र क्रमांक 1.3
उत्तरदाताओं की स्थायी स्वरोजगार की स्थिति

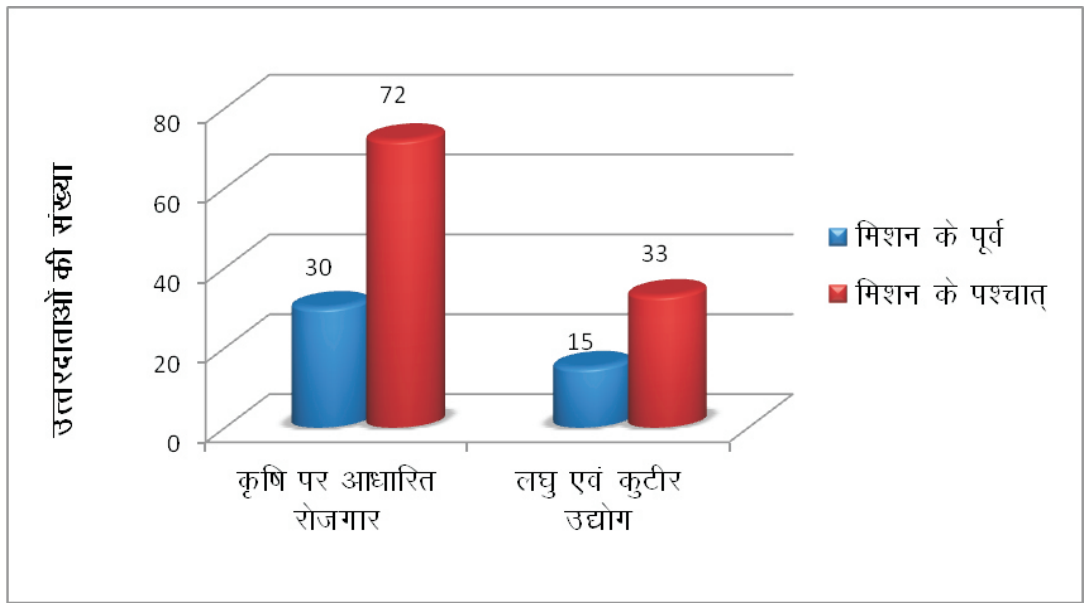

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि मिशन के पूर्व समस्त उत्तरदाताओं में से 12.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि पर आधारित रोजगार में संलग्न थे तथा 6.25 प्रतिशत उत्तरदाता लघु एवं कुटीर उद्योग में संलग्न थे। इस प्रकार मिशन के पूर्व कुल उत्तरदाताओं में से 18.75 प्रतिशत उत्तरदाता स्वरोजगार में संलग्न थे तथा मिशन के संचालन से पश्चात् कुल उत्तरदाताओं में कृषि पर आधारित स्वरोजगार में संलग्न उत्तरदाताओं का प्रतिशत बढ़कर 30 प्रतिशत हो गया तथा लघु, कुटीर उद्योग में संलग्न उत्तरदाताओं का प्रतिशत बढ़कर 13.75 प्रतिशत दर्ज किया गया। इस प्रकार मिशन के पश्चात् कुल उत्तरदाताओं में से 43.75 प्रतिशत उत्तरदाता किसी–ना–किसी स्वरोजगार में संलग्न है।

मिशन का प्रवजन पर प्रभाव –

शून्य परिकल्पना – मिशन का प्रवजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

स्वातंत्रय कोटि ;कद्धि त्र 1 के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर ग2 का परिकलित मान 126ण्88 है जो कि ग2 के सारणी मान से अधिक है, स्पष्ट है कि चर परस्पर संबंधित हैं। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है अर्थात मिशन का मिशन का प्रवजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उक्त प्रभाव अर्थात मिशन के पूर्व एवं पश्चात प्रवजन की स्थिति को को तालिका क्रमांक 1.4 के माध्यम से दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1.4
उत्तरदाताओं की प्रवजन की स्थिति

क्र.	क्या आप प्रवजन करते हैं	मिशन के पूर्व		मिशन के पश्चात		प्रतिशत वृद्धि/ कमी a-b/a x 100
		उत्तरदाताओं की संख्या (a)	प्रतिशत	उत्तरदाताओं की संख्या (b)	प्रतिशत	
1	हाँ	163	67.9	41	17.1	74.8
2	नहीं	77	32.1	199	82.9	158.4
	योग	**240**	**100**	**240**	**100**	

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर

चित्र क्रमांक 1.4
उत्तरदाताओं की प्रवजन की स्थिति

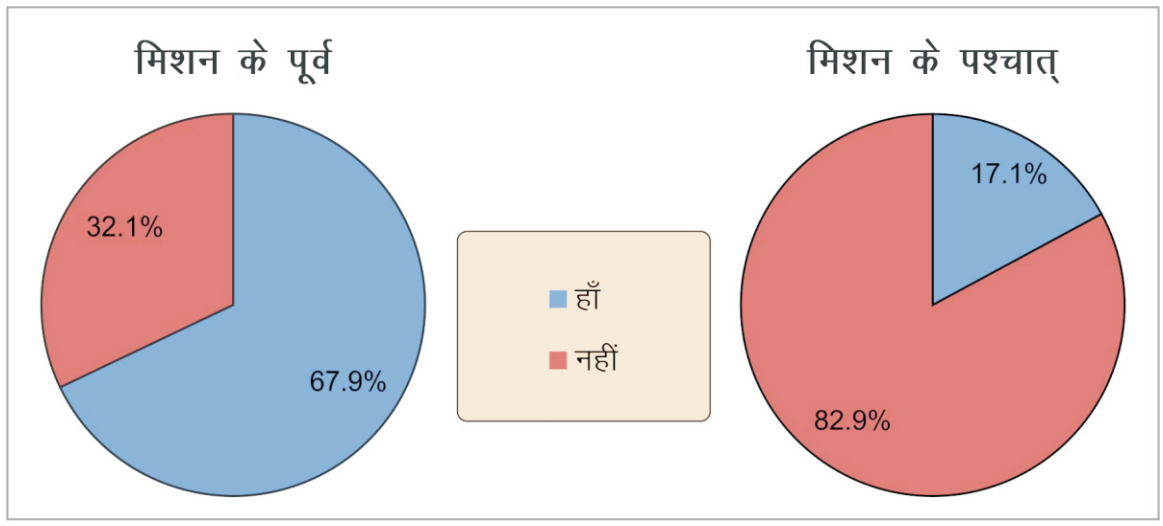

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि मिशन से पूर्व 67.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्रवजित होते थे तथा 32.1 प्रतिशत उत्तरदाता रोजगार की तलाश में पलायन नहीं करते थे। मिशन के पश्चात् जहाँ प्रवजन करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत घटकर 17.1 प्रतिशत दर्ज किया गया, वहीं प्रवजन नहीं करने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत बढ़कर 82.9 प्रतिशत दर्ज किया गया। इस प्रकार मिशन के पश्चात् प्रवजन करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या में 74.8 प्रतिशत की कमी हुई है या प्रवजन नहीं करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या में 158.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इस प्रकार मिशन तहत प्रवजन में कमी आई है।

निष्कर्ष –

राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन का मुख्य उद्देश्य ग्रामों में जल संरक्षण एवं संर्वधन संरचनाओं का निर्माण कर कृषि उत्पादन को बढ़ाकर ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाना है। मिशन के परिणामतः कृषि उत्पादन मजदूरी दोनों में वृद्धि ने ग्रामीणों की आय में वृद्धिकर लोगों की क्रय क्षमता में वृद्धि ने स्थायी स्वरोजगार को पनपने, वृद्धि करने, उनको बाजार प्रदान कर स्व रोजगार के लिए साख मुहैया कराने में मदद की है। विभिन्न जल संरक्षण संवर्धन संरचनाओं के निर्माण से मौसमी बेरोजगारी एवं प्रछन्न बेरोजगारी तो दूर हुयी है, साथ ही अनेक बैरोजगार ग्रामीणों एवं सीमांत कृषकों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुऐ है तथा उन्हें प्राप्त होने वाले रोजगार दिवसों में भी वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्वरोजगार संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं उन्हें स्थापित कराने में मिशन द्वारा आर्थिक सहयोग ने ग्रामीणों में स्थायी स्वरोजगार स्थापित करने की गति को तीव्र किया है तथा ग्रामों से होने वाले प्रवजन को कम करने का सार्थक प्रयास किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात् आज तक क्रियान्वित सभी ग्रामीण विकास की योजनाओं में से राजीव गांधी वाटरशेड मिशन ने ग्रामीण विकास

में न केवल शासकीय आंकड़ों में सकारात्मक बढ़ोत्तरी दिखाई बल्कि जमीनी स्तर पर भी इसके सकारात्मक प्रभाव को महसूस किया जा सकता है मिशन ने ग्रामवासियों के आर्थिक–सामाजिक एवं नैतिक स्तर में वृद्धि कर उन्हें रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1 कोठारी सी.आर.–स्टेटेस्टिकल मेथड्स एण्ड टेक्निक्स एस चन्द्र पब्लिकेशन नई दिल्ली।
2 रे मनोहर शर्मा हरस्वरूप– सांख्यिकीय विधियाँ, रामप्रसाद एण्ड, संस भोपाल
3 राय पारसनाथ–अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
4 जलग्रहण मार्गदर्शिका–राजीव गाँधी जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन, भोपाल 2006
5 गाईड लाईन फार–मिनिस्ट्री ऑफ रूरल डेवलपमेंट गर्वमेंट ऑफ इंडिया, 17 अक्टूबर 1994वाटरशेड डेवलपमेंट
6 पत्र–पत्रिकाए–कुरूक्षेत्र, योजना, द हिन्दू, सहारा
7 समाचार–पत्र–दैनिक भास्कर, नई दुनिया, राज एक्सप्रेस

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net